उद्यमो भैरवः

SATISAR

THE CULTURAL HERITAGE

नौदेहेन सती देवी भूर्मिभवति पार्थिव। तस्मातु भूमौ सरस्तु विमलोदकम्। ड्योजनायतं रम्यं तदर्धेण च विस्तृतम। सतीदे ामिति ख्यातं देवाक्रीडं मनोहरम्।

The goddess SATI, with the body in the form of the boat, becomes the earth and on that earth comes into being a lake of clear water, knwon as SATIDESA.....A Sporting place of Gods.

कः प्रजापतिरूदिदश्टः क यप च प्रजापतिः। तेनेदं निर्मितं दे ां क मीराख्यं भविश्यति।।

Prajapati is called Ka, Kashyapa is also a Prajapati, Built by him, This place will be called "KASHMIR"

A Cultural Window of Satisar Foundation

SAPTRISHI-5084 KASHMIRI PANDIT VISTHAPAN-19 VIKRAMI-2065

CHAPTER: DIPAWALI POOJA VIDHI

ईष्ट दीपावली पूजा विधि

For Private Circulation - Not for Sale

INVOCATION OF GODS

ॐ ज्याय स्वन्तष्चितिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सथुराश्चरन्तः
अन्यो अन्यस्मै वहगु वदन्त एत सध्रीची नान्वः सम्मनसस्कृणेमि''

May the developed and prosperous nations and their individual members respect the sovereignty of other nations and on the other hand every individual may respect the senior member of the society. Every person should do nothing without fully considering the merits and demerits of his deeds. They should be industrious and should not pause till they accomplish their goal paying single minded attention to it. They should cultivate mutual friendship and may talk to each other with gentility and affection. They may impart knowledge to make every heart purified?

सरस्वती वन्दना

अनादिरूपां अजन्मरूपां, अचिन्त्यरूपाम वन्दे, वन्दे ।1।
चन्द्रवदनां, पद्मनयनां हंसवाहनाम् वन्दे, वन्दे देवीं ।2।
कुन्दद ानां श्वेतवसनां गौरवर्णाम् वन्दे, वन्दे देवीं ।3।
सत्यस्वरूपां ि ावस्वरूपां, सुन्दर–रूपाम वन्दे, वन्दे ।4।
सत्स्वरूपां चितस्वरूपाम आनन्दरूपाम, वन्दे, वन्दे ।5।
पुस्तकधारिणीं, वीणावादिनी, वाणीदायिनीम, वन्दे, वन्दे ।6।
विदद्यादायिनी तमोहारिणी, अमृतवर्शिणीम्, वन्दे, वन्दे ।7।
भयहारिणी, अभयदायिनी, आतङ्कना ि ानीम्, वन्दे, वन्दे ।8।
ज्ञान दायिनी, मुक्तिदायिनी मार्गद ि ानीम् वन्दे, वन्दे देवी ।।

डा.बी.एन.कल्ला

Divine Dance of Lal Ded

सु म्य निशे ब् तस निशे
म्य तस निशे करार आव
नाहकय छोंडुम म्य पर दिशे
पनने दिशे म्य यार आव

He is by me, I am by him
I have found steadyhood by him
unnecessarly I searched for him in other bodies
He (My friend) came in my own self

Contents

1. Mata Laxmi Puja
2. Dipawali
3. Marriage Rituals
4. Cover Page

Dipawali Puja

Art & Design by

Sh. Satish Munshi

Pearls of Rup Bhawani

किया त् कारण युस पान् जाने
मनय माने ह्यनं तय रात
स्व रुप ध्याना युस परज़नावे
माने मनय त् नैन्यस ज़ात

One who knowns that cause & effects is ddue to mind
Who recognises the "self" a meditation day & night through mind
he will get to know the reality

Price :Promotion & Propagation of Kashmiri Pandit Culture

Satisar Speaks .....

किं किं दुखं दनुजदलिनी! श्रीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनी! ख्याप्यते च स्तुतायाम्।
का का सिद्धिः सुखरनुते ! प्राप्यते नाचितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चितमालम्बितायाम्।।

O you destroyer of demons! What human affliction is there that does not get waived by one's rremembering you constanlly.

O Joy of creation! What extent of knowledge (Fame) is there that is not attained by singing your praise.

O Mother divine, adored by the chief gods! what accomptistment is there that cannot be gained by worshipping you.

What kind of yoga is there that cannot be accomplished by surrendering the mind of thee.

(Panchastawi)

"RITUALS AND AUSTERITY"

Kashmiri Pandits are known world over for their tasty celebration of social functions and rituals. Some of the rituals are unique to people of this landlocked valley even though we no more are habituating in the beautiful vale of Kashmir. Thankfully after migration we have maintained our tempo and we leave no stone unturned in celebrating our festivals and rituals in the same fashion as it once used to be when we were in Kashmir. Marriages and some other social functions have now become a cornerstone for socialising and meeting our old friends and relatives. It is with great pleasure that we participate in *havans* and other social congregations not only for the spiritual solace but also to meet each other and keep our social grandeur alive as always. And it should happen and it should not be forsaken by any means if we have to survive as a community in exile and every time we meet, we must depart with the hope to meet in our own land next time- a feeling which will keep us close not only to our roots but also encourage us to think of ways and means to recapture our land – land of our ancestors.

While this socialisation is important, we do not have to fall in rat race of ostentatious –ness and efforts need to be honestly made to make our social functions austere and simple. No doubt some of us may afford ostenity but for the sake of those of our fellow community members who may not be able to afford the same luxury, we have to be a role model. This will enable our community to strive in this dark hour of history. Especially important is the marriage function where we tend to over spend sometimes and it is here that we would need to be very simple. Lest some of us may nurture a feeling of helplessness. It would therefore be in place if each one of us create a self made code of conduct to escape this rat race and be austere and simple and take everybody with us.

It will be great good to this community if we understand the meaning of each ritual of marriage. A deep introspection would reveal that all functions in the marriage ceremonies are infact directed towards the God and God loves those who are simple and austere. Satisar is therefore trying to educate the masses about some basic rituals, their background and methods of solemnising these in very simple way. We hope people will largely benefit from these social tit bits and learn to celebrate these austerely.- so that we have a sense of belonging among ourselves.

-Tatha Astoo

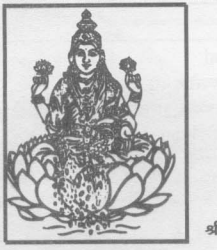

एक पौराणिक कथा के अनुसार माता लक्ष्मी व माता सरस्वती कश्मीर क्षेत्र में माता पार्वती से मिलने आई तो उन दोनो माताओं ने कश्मीर में ही रहने की इच्छा जताई पर वहाँ के ऋशियों व मुनियों ने माता सरस्वती का तो स्वागत किया परन्तु महालक्ष्मी को वर्श में केवल एक बार कश्मीर में आने की अनुमति दी वह दिन होता है माता का जन्मदिन यानि दीपावली का दिन

इस दिन माता महा लक्ष्मी का जन्म दिन होता है!

श्री महालक्ष्मी भगवती पूजन विधि

गणपति जी का ध्यान करें

ओं शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नो पशान्तये।।
अभिप्रीतार्थ सिध्दयर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।

गुरूः ब्रह्मा, गुरूः विष्णुः, गुरूः साक्षात् महेश्वरः।
गुरूरेव जगत् सर्व तस्मै श्री गुरवे नमः।।
गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, श्री परमेष्ठिने गुरवे नमः,
श्री परमाचार्याय नमः।। आदिसिद्धभ्यो नमः।।

देवी महालक्ष्मी का ध्यान / व नमस्कार करें !
हथेली पर थोड़ा पानी डाल कर अपने ऊपर छिटके

तीर्थे स्नेयं तीर्थमि एव समाननां भवति
मानः रांसा अरूषो पूर्तिः प्राणइ. मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते

अनामिका (Sun Finger) में पवित्र पहनें (या फूल हाथ में रखें)
यदि अँगूठी हो तो (नग के बगैर) पवित्रक की जगह पहने

वसो पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारं।
अयक्ष्मावः प्रजया संसजामि, रायस्पोषेण बहुला भवन्तीं।।

रत्नदीप को तिलक व फूल (अक्षत) चढ़ावे

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरापहः।
प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।।

धूप को तिलक व पुष्प (अक्षत) लगावें

वनस्पति रसो दिव्यो, गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां
धूपोऽयं परिकल्पितः।।

सूर्य भगवान का ध्यान करे

नमो–नमो धर्म निधानाय, नमः सकृतसाक्षिणे।
नमः प्रत्यक्ष देवाय, श्री भास्कराय नमो नमः।

निर्माल्य पात्र (थाली) में जल की धारा डालते हुए पढ़ें।

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च
न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः, तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।।

आत्मने नाराणाय आधार शक्तयै **श्री महालक्ष्मी देव्यै पूजन निमिते।**
धूप–दीप संकल्प, सिद्धिर अस्तु दीपो नमः, धूपो नमः

बायां जनेऊ रखकर पितरो को जल दान दे

नमः पितृभ्यः प्रतेभ्यो, नमो धर्माय विष्णवे। नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः
ऊँ तत सत् ब्रह्म अद्य तावत् कार्तिक मासस्य पक्ष कृष्ण पक्षस्य

वासरां श्री महालक्ष्मी पूजनं निमिते दीपः स्वधा धूपः स्वधा

एक थाली में अपनी सोने की अँगूठी, लक्ष्मी का विग्रह (Idol or coin of Shri Lakshmi) अथवा ब्वपद रखें।

एक खोसू अथवा गिलास में तिलक-फूल व जल डाले व पढ़ें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तुवः।
संसृष्टाः तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणों अस्तु वः।
संयावः प्रिया-स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः।
आत्मावो अस्तु सं प्रियः सं प्रियास्तन्वों मम।

लक्ष्मी (Or Coin) की प्रतिमा पर यही पानी डालते जाए

अश्विनोः प्राणस्ता अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीवः।
मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीव,
बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव,
श्री महालक्ष्मयै जीवादानं परिकल्पयामि नमः

हाथ में अर्ध फूल लेकर पढ़े।

गायत्रयै नमः

1 ओं भूः भुवः स्वः तत् सवितुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

2 ओं श्रियै विद्महै कमलवासिन्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

3 ओं तत् सत् ब्रह्मः कार्तिक मासस्य, कृष्णपक्षस्य, अमावस्यां भगवत्याः लक्ष्म्याः, आत्मनो वाङ्मनः कार्योपार्जित पाप निवारणर्थ श्री महालक्ष्मी पूजनं अर्चामहं करिष्ये ओं कुरुष्व।

अर्ध और फूल थाली में रखी महालक्ष्मी की प्रतिमा के सामने रखे तथा पढ़े।

ओं ह्रीं श्री कमलवासिने श्रेयै महालक्ष्मयाः इदं आसनं नमः

अब महालक्ष्मी का आवाहन करें। (Now Inovoking the Goddess Laxkmi) फूल हाथ में लेकर पढ़े

भगवत्यै लक्ष्म्यै, सिद्व लक्ष्म्यै, युष्मानं पूजयामि ओं पूजय, भगवतीं लक्ष्मीं, सिद्व लक्ष्मीं, महालक्ष्मीं श्रियं, पदमां अच्युतां चारुहासिनी आवाहयिष्यामि ओं आवाहयः

चान्दी की प्रतिमा अथवा प्रतिमा पर आवाहन फूल लगाये व पढ़े।

आवाहयाम्हं देवी लक्ष्मी त्रैलोक्यपूजिताम्। भक्तं मोहाकुलमार्त पश्यन्ती स्निग्धचक्षुषा --- 1 आगच्छ - आगच्छ देवेशि क्षीरार्णवसमुद्भवे। भक्तानं उपकारार्थ सान्निध्यं कुरु सर्वदा --- 2
रक्तवर्णा महातेजा रक्तस्रगधाम भूषिता लक्ष्मीसूया हिं त्वं देवि रक्ष मां शरणागतम् -- 3

लक्ष्मी का ध्यान व प्राणायाम करें

पानी पाध्य (र्वमित ूजमत ज मिमज) के लिए देवे

ऊँ ह्री श्री कमलवासिने श्रेये महालक्ष्मैये पाध्यं नमः।

पाध्य का बचा हुआ पानी छोड़कर नया पानी लेवे और अर्ध्य देवे

ऊँ ह्री श्री कमलवासिने श्रेये महालक्ष्मैये इदं वो अर्ध्य नमः।

दही, दूध, घी, शक्कर, काफूर, केसर, चन्दन आदि से युक्त जल से भगवती पर जल डाले।

ऊँ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चंद्रांहिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदोमआवह।।--- 1

ताम्मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्या हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।-2

अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपहवये श्रीमदिवीजुषताम्।।--- 3

काँसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रा ज्वलन्तीम् तृप्तां तर्पयन्तीम।।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णा तामिहोहवयेश्रिमय्।।--- 4
चंद्रां प्रभासां यशसाज्वलनतीम् श्रियंलोके देवजुश्ताम् उदाराम्।

तां पद्मिनीमी शरणमहं प्रपध अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोमि।।--- 5

आदित्यवर्णे तपसोधिजातों वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः।
तस्यफलानि तपसानुदंतु मायान्तरायाश्च बाह्याअलक्ष्मी।।- 6

उपैतु मॉं देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रार्दुभूतो सु राष्ट्रे अस्मि कीर्ति ऋद्धिं ददातु में।।--7

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम।
अभूतिम् असमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मेगृहातू।--- 8

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम।।--- 9

मनसः काममाकूतिं वाचस्सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतां यशः।।---10

कर्द्धमेन प्रजाभूतामयि संम्भमवकर्दमं।
श्रियं वासय में कुले मातरं पद्मालिनीम्।।--- 11

आपः सृजंतुस्निगधानि चिक्लीत वसमे गृहे।
निचदेवीं मातरंश्रियं वासय में कुले।।--- 12

आर्दा पुष्करिणीं पुष्टिं सूवर्णा हेममालिनीय्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदों मआवह।--- 13

आर्द्रायः करिणीं यष्टि सूवर्णा पिंगला पदमालिनीम्।
चंद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदों मओवह।।--- 14

तांम आवह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोंदास्योश्वान् विन्देयं पुरूषानहम्।।-15

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्त पंचदश ऋच श्री कामः सततं जपेत्।।---16

पानी पितरों को अर्पण करे।

ऊँ नमो देवेभ्य
स्वधा ऋषिभ्या (बीच में जनऊ करे)
ऊँ तत सत् ब्रह्म कार्तिक मासस्य कृष्ण पक्षस्य अमवस्यायां वासरां श्री महालक्ष्मी पूजनं निमिते स्नानं नमः ।

भगवती पर फिर शुद्ध जल डालते हुए पढ़े।

ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्रैये महालक्ष्मैये भगवत्यै पूजनं निमिते मंत्र गुद्कं नमः।

अपने बाई हथेली पर एक फूल रखकर तथा थोड़ा पानी रखकर भगवती के ऊपर घुमा कर अपने बाये कंधे से पीछे फैंकें।

ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्रैये महालक्ष्मैये आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः।

देवी के चरणों को छू कर अपने नेत्रों को स्पर्श करे।

ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्रैये महालक्ष्मया नेत्र स्पर्शनं करोमि नमः।

अब देवी को आसन देने के लिए फूलों से आसन सजाए तथा देवी को बिठायै

ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्रैये महालक्ष्मैये आसनाय नमः, पदमासनाय नमः, कमलासनाय नमः।

देवी को फूलों से तिलक आदि से सजाए

ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्री महालक्ष्मी भगवती अनुलेपनं नमः ।

फिर से हाथ धोकर तिलक, अर्घ व पुष्प चढ़ाये

ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्री महालक्ष्मी भगवत्यै गन्धो (तिलक लगायै) अर्घो नमः, पुष्पं नमः ।

अब धूप अर्पण करें

लक्ष्मये, पद्ममलयायै, पद्मायै, कमलायै, श्रियै, हरिप्रियायै, क्षोरोदधि संभवायै, संपत्यै, हरिण्यै, लोकविश्रुतायै, इन्दिरायै, लोकमात्र, क्षीराब्दे तनयायै।

ओं ह्रीं श्रीं कमलवासिन्यै, श्रियै, महालक्ष्म्ये जन्मोत्सव निमित्ते अर्घो नमः पुष्पं नमः

रत्नदीप चढ़ाईये

ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै रत्नदीपं सर्मपयामि नमः ।

चामर करे

ॐ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै चामरं परिकल्पयामि नमः ।

इधर आप लीलरब्ध व अन्य स्तोत्रो का पाठ करे

लीलारब्ध स्थापित लुप्ताखिल लोकां,
लोकातीतै र्योगिभिर् अंतर् हृदि मग्ग्याम्।
बालादित्य श्रेणि समान द्युति पुञ्जां,
गौरीम् अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज ध्यान पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम् ईशाड्.गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
शारिका अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

प्रत्याहार ध्यान समाधि स्थिति भाजां,
नित्यं चिते निर्वशति काष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य ज्ञानानन्दमयीं तां तडित् आभां,
शारदा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

चन्द्रपीडा नन्दितमन्द स्मितवकत्रां
चन्द्रापीडा लड्.कश्त लोला लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा द्यर्चित पादाम्बुज युग्मां,
राज्ञी अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

नाना कारैः शक्ति कदम्बैः भुवनानि,
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम् आनतिभाजां,
त्रिपुरा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

मुलाधारात् उत्थित वन्नीं विधिरन्ध्रं,
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताड्.गीम।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवव्द्यां
ज्वाला अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

आदि क्षान्ताम् अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं,
भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द ब्रह्मानन्दमयीं ताम् अभिरामां,
बाला अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

यस्याः कुक्षौ लीनम् अखण्डं जगत् अण्डं,
भूयो भूयः प्रादुर अभूत् अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्ध तां स्फटिकाद्रौ विहरन्ती,
दुर्गा अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम् अध्यात्म ज्ञान पदव्या गमनीयां,
काली अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः,
साक्षी यस्याः सर्वविधौ संहरणे च।
विश्वत्राण क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
लक्ष्मी अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।।

पूजा काले भाव विशुद्धिं विदधानो, तिलक,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धि सम्पत्तिम् उच्चैः शिवभक्तिं,
तस्या वश्यं पर्वत पुत्री विदधाति।।
गौरीम् अम्बाम् अम्बु रूहा क्षीम् अहम् इडे।

फूल चढ़ाकर पढे।

ॐ ह्रीं श्रीं कमलवासिनें श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै छत्रं परिकल्पयामि नमः।

आईना दिखाकर पढे। (Facing the palm of right hand towards deity)

ॐ ह्रीं श्रीं कमलवासिनें श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै आदर्श परिकल्पयामि नमः।

जल से तर्पण करते हुए पढे

ॐ ह्रीं श्रीं कमलवासिनें श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै धूपं-दीप संकल्पात् सिद्धिरस्तु धूपों नमः दीपों नमः।

देवी को श्याम र्वण का वस्त्र अर्पण करे

ॐ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै वस्त्रं परिकल्पयामि नमः ।

फल और तम्बूल अर्पण करे

ऊ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै ताम्बूल नैवेधं परिकल्पयामि नमः ।

देवी की मानसिक परिकमा करे तथा पुष्प लगाये।

देवी को अपोशान दे तथा आचमन दे।

शन्नो देवीर अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः।

ऊँ ह्रीं श्री कमलवासिने श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै अपोशानं नमः, आचमनीय नमः ।

दक्षिणा देने के लिए पैसो पर पानी छिटके तथा पढ़े।

शन्नो देवीरभिष्टते आपो भवन्तु पीतये, शंयोरथिस्त्रवन्तु नः ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्री महालक्ष्म्यै भगवत्यै ।
दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्करणं ददानि ददनि, एताः देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु

अब नयी पुस्तक, कलम इत्यादि लाए इन पर टीका लगाए तथा स्वास्तिक / ऊँ बनाये और पढ़े।

लक्ष्मयै, मेधायै, धराय, तुष्टै, पुष्टै मत्यै पुस्तक ईश्वरयै श्री महालक्ष्म्यै दैव्यै समालभनं गन्धों नमः, अर्धो नमः, पुष्पं नमः

अब विश्व के सारे प्राणीयों को भोग चढ़ाने के लिए नैवेध लाये तथा प्रेप्युन ; भोग लगाने के लिए मीठी पूरिया/मिठाई बिन खोप वरुक द्ध का पाठ करे।

नैवेद्य की थाली को छूकर मन्त्र पढ़े

अमश्तेष्मुद्रया अमृतीकृत्य। अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्रणि सवात्रिस्य देवस्य त्वासवितुः प्रसवे अश्विनो र्बाहुभ्यां पूश्णों हस्ताभ्यामादधे। श्री महागणपत्यादि कलश मण्ड़ल देवताभ्य, वासुदेवादिभ्यः विष्णु पंचायतन देवताभ्यं। अभ्यड.करी देव्यै क्षेमड.करी भवान्यै; सर्वशत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधि पितये रुद्रराज भैरवाय (only in Jammu, recite the name of the Bhairav of your area) पत्रच चत्वारिश्द्ध वास्तोशपति याग देवातायः, इंद्रयादिभ्याः दशलोकपालेभ्यः, आदित्यादिभ्यो, एकादश ग्रहस्याः, महागायत्रे, सावित्रे, सरस्वतयै, हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्योः ऊँ तत्सद बह्मा अधतावत् **तिथो कार्तिक मासस्य कृष्णपक्षस्य अमावस्या तिथा Day वासरायां श्री ऊँ ह्रीं श्रीं कमलवासिने श्रैंये महालक्ष्मयै भगवत्यै संताशणार्थ श्री महालक्ष्मी पूजन निमिते उों नमो नेवेध नेवेदयामि।**

भगवती के लिए एक छोटी थाली में नैवेध रखें।

श्री लक्ष्मयै भगवतयै नैवेद्यं नेवेदयामि नर्मो

चढू का (जो हम छत पर मातृकाओं के लिए बाहर रखते है) छूते हुए पढें।

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या, घोरतरा परा, खेचरी, भूचरी, रमा तुष्टा भवन्तु में सदा, आकाशं मातृभ्यः, अन्नं नमः अर्धो नमः पुष्पं नमः (चढू को तिलक व अर्घ–फूल लगायें)

थोड़ा भोग अलग से रखे व पढ़ें।

यो अस्मिन निवासति क्षेत्र क्षेत्रपालः संकिकरः तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय संययुत्तम्।।
क्षां क्षेत्राधि पतये अन्नं नमः।
रां राष्ट्राधि पतये अन्नं नमः।
सर्वाभयं वरप्रद मयिपुष्ठि पुष्टपति दधातु।

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा भगवती त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा च अुरसा मनसा च नमस्कार करोमि नमः

इस पूजा का विर्सजन व अहिद्र नहीं करना चाहिए क्योंकि लक्ष्मी हमेशा हमारे घरो में निवास करने की कृपा करें।

**Jyotishachyara & Karam Kand Shiromani
Sh. Kashi Nath Handoo
(Shiv Nagar)**

दीपावली
सिद्धांत व रहस्य

दीपावली की रात्रि को कालरात्रि कहते है। यह वह रात्रि है जो कि पूरे वर्ष में सबसे काली होती है। (The darkest night of the year).

आइये काली तत्व को समझने का प्रयत्न करें।

यदि साधक ध्यान से विचार करे तो समझेंगे कि काली अर्थात संहार, संहार किसका ? संहार का अर्थ है, वास्तविक्ता का मूल स्वरुप अथवा वस्तु का अपना वास्तविक स्वरूप का त्याग कर कोई और (दूसरा) स्वरुप धारण करना।

(Kali is the energy which is said to be in operation when a thing or situation changes its original position into new one).

क्या आप जानते है कि यह सारा संसार प्रपन्च पैदा ही नही होता यदि सात्विक गुण व राजसिक गुण तमोमुण के कारण सृष्टि को प्रस्फुटित होने को वाध्य नही होते वेदो में इस क्रिया को पन्चीकरण क्रिया कहते है। इस पन्चीकरण के कारण सत्य, रज व तम गुण एक दुसरे के साथ मिलकर सृष्टि निर्माण करते (The Satva, Rajasik and Tam properties in an object start chain reaction among five elements & senses. Thus giving birth to new process known as evolutionary proccess. This chain reaction starts only when the basic properity in a substance or organisim is predominated by the Tamo Guna i.e. the Kali Tatva) यह पन्चीकरण तमोगुण से शुरु होता इस कारण तम ;अर्थात अन्धकारद्ध ही सृष्टि का बीज है ओर तम अर्थात काली ही सृष्टि को उत्पन्न करती है।

(The essential Impurities start the creation of Universe).

यही कारण है कि कशमीर के पंडित काली के तत्व (Dissolution) को ज्यादा महत्व देते है।

> नवदुर्गा के 9 दिनो मे आरम्भ के 3 दिवस माँ काली के होते है।

इस पद्धित को कौल पद्धित, वामामार्ग पद्धित कहते है यह कशमीर का वह रहस्यमय मार्ग है जो कि परम्परा से उतरता चला आ रहा है।

दीवाली की रात्रि काली अर्थात काल की रात्रि है और यही वह रात्रि है जब कुछ नया, कुछ नवीन और कुछ अलग पैदा हो सकता है इसलिए यह प्रकाश की रात्रि है क्योकि जिस समय साधक का शक्ति चक्र पूरा हो जाता है उसी समय साधक के लिए विश्व समाप्त हो जायेगा ।

(When one completes a task started by an energy the world gets dissolved).

इस रात्रि में चंद्र व सूर्य तुला मे होते है व उनके नजदीक शुक्र भी होता है जो सुख-सौभाग्य का प्रतीक है।

कार्तिक अमावस्या के दिन तुला राशि में स्थिती सूर्य अपने नीच स्थान में होता है ओर नीच सूर्य सदा उच्च दृष्टि डालता है और इस तरह मन ;चन्द्रद्ध व आत्मा ;सूर्यद्ध लयबद्ध रहते है।

धृण, लज्जा, भय, शंका, जुंगुप्सा, चेति पंचमी
कुलं शीलं तथा जातिरश्टौ पाशाः प्रफीर्तिता ः।।

धृण, लज्जा, भय, शंका, जुंगुप्सा, निंदा, कुल, शील और जाति ये 8 पाश कहे गये है इनमें जो बंधा हुआ है वह जीव है इन्ही पाशों से परे तंत्र जीव को सदाशिव बनाता है।

दीपावली की रात्रि अंधकारमय मोहयुक्त है । और इन पाशो से मुक्त होने की रात्रि है

तो इस रात्रि को क्या विशेष करे ?

आत्म चितम्!

कालीदीनां तत्वानाम अविवेको माया मोहावरणात् सिद्धि।

मोहजयादनत्ताभोगात्सहज विद्याजयः।

जाग्रद् द्वितीय कर ः।

अर्थात

आत्मा चित हैं।

कला आदि तत्वों का ज्ञान ;अविवेकद्ध न होना ही माया है।

मोह आवरण से युक्त साधक ;योगीद्ध को सिद्धियाँ तो फलित हो जाती है, लेकिन आत्मज्ञान नही होता है।

स्थाया रूप से मोह जय ;ब्वदजतवसद्ध होने पर सहज विद्या प्राप्त होती है।

उसी समय ऐसे साधक को ऐसा बोध होता है कि सारा जगत मेरी ही किरणों का प्रस्फुरण है।

इस कारण इस दिन/रात्रि को किरणों अर्थात (प्रकाश) का फैलाव हो जाता है।

अब बाहर तो हमने प्रकाश कर दिया पर स्व्यं कहाँ है ?

अन्दर का प्रकाश कँहा से लाये तभी तो विमर्श होगा ?

यही वह समय था कि जिसके लिए हमारे पूवजों ने कुछ साधानाओं का अविष्कार किया था जो कि तन्त्र मार्ग व गुहीय थी परन्तु बड़ी उपलब्धि । देने वाली थी।

आइये जानते है कि क्या करे ?

1. इस अन्धकारमय रात्रि को मन की मृत्यु होने दे। क्योकि जहाँ मन पहुँच जाता है वहाँ धर्म नही जहाँ मन नही पहुँचता वही धर्म हैं।

तो शुरू करे मन्थन की क्रिया ।

मन्थन की क्रिया ध्यान से, पूजा से अथवा मन्त्र जप इत्यादि से

आप को पता ही है कि जब मन्थन की प्रक्रिया शुरू हो जाता है तो क्या पैदा होता ।

पहले तो शरीर का वासना रूपी ज़हर । उस विष को शिव पी लेते है इसके बाद कई ऋिद्धियाँ व सिद्धिया उत्पन्न होती है उधर भी नही ठहरना है फिर होता है महालक्ष्मी का प्रर्दुभाव इसलिए हर अन्धकार (तम, विष) के बाद महालक्ष्मी अर्थात समृद्धि का प्रार्दुभाव होता है ।

तब कही जाकर अमृत पान का अवसर मिलता है। समुद्र मन्थन में यही होता

हमारे शरीर की रीढ की हड्डी में सुष्मना नाडी को साधक मन्थन क्रिया में लगाते है कैसे ?बस कुछ न करो, बस बैठ जाओ ध्यान रखना जब कहते है कि कुछ न करो, तो उसका मतलब है कि कुछ भी न करना, बस बैठ जाना, बस इतना ही करना कि बैठ गए और कुछ भी मत करना क्योकि तुमने कुछ किया कि मन आया; अन्धकार आया और जहाँ मन है वही तो विचार है और जहाँ विचार है वही तो व्यवहार आ जाता है

इसीलिए केवल आधे घण्टे ही सही बिना कुछ किये बैठ जाओ। तंत्रसार के अनुसार दीवाली

की रात्रि कौल पद्धतियों, तन्त्रों का उनुसरण करने वाली शक्तियों ओर लक्ष्मी की पूजन के लिए उपयुक्त समय है।

यही वह रात्रि है जिस समय आप थोडे ही समय में कोई मन्त्र धारण कर उसको सिद्ध कर सकते है दीवाली की रात्रि में आप अपने-अपने पूजा की पद्धितयों को सिद्ध कर सकते है योगी व साधक इस रात्रि के लिए पूरे वर्ष प्रतीक्षा करते रहते है कि कब यह रात्रि आयें ताकि मन्त्रों की सिद्धि हो सके।

तांत्रिक,(Who follow the Aagam (Ancient) Litrature) साधक इस रात्रि में साधनाएं क्यों करते है?

तंत्र में काल रात्रि को शक्ति रात्रि कहा गया है यह रात्रि जहाँ शत्रुनाशक है वहीं शुभत्व का प्रतीक भी है।

दीपावली रात्रि के चार प्रहरां का अलग-अलग महत्व है।

पहला प्रहर (up to 8:00 p.m.)

निशा ---- लक्ष्मी ---------- धन

दूसरा प्रहर (8:00 p.m. - 10:30 p.m.)

दारूण ----- भैरवी -------- तंत्र-मंत्र ---------- सिद्धि

तीसरा प्रहर (10:30 p.m. - 1:00 a.m.) (सबसे उतम)

महाकाली ------ शत्रुनाश, बाधानाश

चौथा प्रहर (1:00 a.m. - 3:00 a.m.) (सबसे उतम)

महात्रिपुरसुंदरी -------- धन-संपदा

चौसठ यौगिनी ----------तंत्र साधना

इस महानिशा में चाहे लक्ष्मी पूजन करे या काली व श्री चक्र अथवा अन्य मन्त्रों की साधना करे सफलता कुछ ही पल में मिलती है।

2. मीठी पूड़ियाँ बनाकर श्री लक्ष्मी तथा गणेश जी को अर्पण करके प्रसाद आसपास के घरों, रिशतेदारों तथा प्रियजनों में बाटें।

बाटनें से पहले "प्रेप्युन" के द्वारा इस भोग को सम्स्त सृष्टि में स्थित देवो, दानवों, मनुष्यों व जीवों को समर्पित करे।

3. पूजा के बाद यदि आप किसी मन्त्र का जप करते हे तो उसी मन्त्र का जप 108 बार कर मन्त्र सिद्ध हो कर आपको मनवान्छित फल देने लगेगा।(Reciting any Mantra which one has been initiated in for 108 times will start giving the desired results) one can get initiated in new Mantra).

4. इस अवसर पर आप किसी उपयुक्त मन्त्र की दीक्षा लेकर मन्त्र जप शुरू कर सकते है। (One can get initiated in new Mantra).

5. इस रात्रि में "श्री" यन्त्र को पूजा गृह में स्थापित करके विधिवत मन्त्र "श्री सूक्त" से पूजा कर सकते है।श्री यन्त्र के विग्रह को दूप-दीप विधि ा से तथा भोडशोपचार कर श्री सूक्त का जप करे।

श्री सूक्त में "श्री" का आवाहन जातवेदस के साथ हुआ है जातवेदस अर्थात अग्नि है उस कारण दीप जला कर अग्नि के द्धारा "श्री" का आवाहण करते है।

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं अन्धकार विनाशक।
इमां मया कृतां पूजां गृहणान्तेजः प्रवर्धय।।

ऊँ हिरण्यवर्णाम इति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य श्री आनन्द, कर्दमचिक्लीत, इन्दिरासुता महाऋषयः।

श्रीः अग्नि देवता। अस्तिस्त्रोनुष्टभः, चतुर्था बृहती। पंचमीषष्ठों त्रिष्टुमों, ततौण्टावनुष्टुमः अन्तया प्रस्तार पंक्तिः। हिरण्यवर्णम् इति बीजं तांम आवह जातवेद इति शक्तिः कीति ऋद्धि ददातु में इति कीलकम्। श्री महालक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

(मन मे संकल्प लेते हुए जमीन पर जल छोडे)

महालक्ष्मी का ध्यान

अरूण कमल संस्था तद्रजः पुंजवर्णा कर कमल घृतेष्टा भीतियुग्माम्बुजाता।

मणिमुकुट विचित्रालंकृति पद्ममाला भवतु भुवन माता संततं श्रीः श्रियै नः कमलं कलरां धेनं ज्ञानमंजलि मेव च पंचमुद्राः प्रदर्श्याथ श्री सूक्तं प्रजपेद् बुधः

ऊँ हिरण्यवर्णा हरिर्णी सुवर्णरजतस्रजाम्।
चंद्रांहिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदोमआवह।।-- 1

ताम्मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्या हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम्।।-2

अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपहवये श्रीर्मदिवीजुषताम्।।--- 3

काँसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रा ज्वलन्तीम् तृप्तां तर्पयन्तीम।।
पद्मे स्थ्तिां पद्मवर्णां तामिहोहवयेश्रिमय्।।-- 4

चंद्रां प्रभासां यशसाज्वलनतीम् श्रियंलोके देवजुश्ताम् उदाराम्।
तां पद्मिनीमी शरणमहं प्रपध अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोमि।।--- 5

आदित्यवर्णे तपसोधिजातों वनस्पतिस्त्व वृक्षोथबिल्वः।
तस्यफलानि तपसानुदंतु मायान्तरायाश्च बाह्याअलक्ष्मी।।--- 6

उपैतु माँ देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रार्दुभूतो सु राष्ट्रे अस्मि कीर्ति ऋद्धिं ददातु में।।--7

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम।
अभूतिम् असमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मेगृहात्।- 8

गंधद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम।।--- 9

मनसः काममाकूतिं वाचस्सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतां यशः।।---10

कर्द्मेन प्रजाभूतामयि संम्भ्रमवकर्दम।
श्रियं वासय में कुले मातरं पद्मालिनीम्।।--- 11

आपः सृजंतुस्निगधानि चिक्लीत वसमे गृहे।
निचदेवीं मातरंश्रियं वासय में कुले।।--- 12

आर्दां पुष्करिर्णी पुष्टिं सृवर्णा हेममालिनीय्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदों मआवह।--- 13

आर्द्रायः कारिणीं यष्टि सृवर्णा पिंगला पदमालिनीम्।
चंद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदों मओवह।।-- 14

तांम आवह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोंदास्योश्वान् विन्देयं पुरूषानहमू।।--- 15

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्त पंचदश ऋच श्री कामः सततं जपेत्।।---16

श्री चक्र की साधना

श्री चक्रमपि देविशि मेरूरुपं न संशयः लकारात् प्राथिवी देवी सशैलवन काननम् । सकाराच्चन्द्र

तारादि ग्रहराशि स्वरूपिणी **(ज्ञानार्णवा)**

श्री विद्या के 12 प्रसिद्ध उपासक है।

मनु, चंद्र, कुबेर, लोपमुद्रा, कामदेव, अगस्त्य, अग्नि, सूर्य, इन्द्र, कार्तिकेय, शिव, दुर्वासा तथा इसके अतितिक्त दतात्रेय ऋषि को भी बड़ा महत्व दिया गया है।

इनमे दुर्वासा द्धारा शुरू की गई पद्धितयाँ आज भी काशमीरी पंड़ितो में विद्यमान है।

महाऋषि दतात्रेय ने इसकी त्रियात्मक आयामो की बड़ी व्याख्या की है यह वही दतात्रेय हे जो कि कई ''कौल'' पंडितो के गौत्र प्रर्वतक है।

दीवाली रात्रि को ''श्री'' यन्त्र की साधना सबसे उतम फल देने वाली है। ''श्री'' यन्त्र ही ''श्री'' विद्या का स्वरूप है।

श्री विद्या का घर यह विश्व है विश्व का अर्थ है हमारे शरीर में चक्रों में स्थित मातृकाए व ब्रह्मांड के रूप में व्याप्त आदि शक्ति के रूप में यह श्री विद्या श्री चक्र के रूप में काशमीर में चक्रेश्वरी के रूप में एक शिला में बिन्दू रूप में विराजित है।

हारि पर्वत पर स्थित श्री चक्र कशमीरी पंड़ितो के रोम-रोम में रक्त के रूप में बह रहा है।

इस ''श्री'' विद्या का त्रियामी स्वरूप पूरा हारी पर्वत है इसलिए यदि दीवाली रात्रि इसके स्वरूप व अधिष्ठात्री देवी का ध्यान व पूजा करे तो कई अभीष्ट वर प्राप्त हो सकते है।

श्री यन्त्र का स्वरूप

इस यन्त्र के बीचो बीच बिंदु और सबसे बाहर भूपूर है। भूपूर के चारों ओर चार द्वार है बीच में 10 अवयक है व इस प्रकार है, बिंदु, त्रिकोण, अष्ठकोण, अंतःदशार, बाहिः दशार, चतुर्दशार अष्टदल, भोडशदल तीन वृत ओर तीन भूपूर।

तंत्रों के अनुसार श्री यन्त्र का निर्माण दो प्रकार से किया जाता है।

एक अन्दर के बिन्दु से शुरू कर बाहर की ओर जो ''सृष्टि-क्रिया निर्माण'' कहलाता है। "Evolution Yantra"

दूसरा बाहर के वृत से शुरू कर अंदर की और जो ''संहार-क्रिया निर्माण'' कहलाता है। "Dissolution Yantra"

सृष्टि क्रम के अनुसार बने श्री यंत्र मे 5 ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण होते है जिन्हे शिव त्रिकोण कहते है। चार अधोमुखी त्रिकोण शक्ति के प्रतीक है।

संहार क्रम के अनुसार बने श्री यंत्र मे चार ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण शिव त्रिकोण होते है। पांच अधोमुखी त्रिकोण शक्ति के त्रिकोण है इसी श्री यंत्र की साधना कशमीर पंड़ित करते है।

इसी यंत्र को दीवाली रात में पूजा इत्यादि करके हमेशा के लिए अपने घर, दुकान, दफतर या जेब में धारण कर सकते है।

श्री यंत्र जहाँ भी रहता है वहाँ विश्व की आधारभूता शक्तियों का एक पुँज बन जाता है। (It gathers all the cosmic energies at a single point).

श्री यन्त्र का ध्यान शरीर तथा ब्रह्मांड में किस-किस स्थान पर रहता है आइये साधकजन विचार करे।

श्री यन्त्र

(Different Figures of Yantra	पिंडात्मकता (Body form)	ब्रह्मांड़ात्मकता (Cosmicform)
1. बिन्दु चक्र	ब्रह्मरंध्र	सत्यलोक
2. त्रिकोण	मस्तिष्क	तपोलोक
3. अष्टकोण	ललाट	जनलोक
4. अंतः दशार	भ्रूमध्य	महः लोक
5. बहिः दशार	गला	स्वः लोक
6. चतुः दशार	हृदय	भुवः लोक
7. वृत	कुक्षि	भूलोक
8. अष्टदल कमल	नाभि	अतल
9. बाह्यवृत अष्टदल कमल	काटि	वितल
10. षोडशदल कमल	स्वाधिष्ठान	सुतल
11. षोडशदल कमल का बाह्य त्रिवृत	मूलाधार	तलातल
12. प्रथम रेखा भूपुर	जानु	महातल
13. द्वितीय रेखा भूपुर	जंघा	रखातल
14. तृतीय रेखा भूपुर	पैर	पाताल

यदि आपके घर में पूजा के स्थान पर श्री चक्र विद्यमान है तो कुल की रीति के अनुसार दीवाली की रात्रि में इसकी पूजा करे।

शरीर के चक्रो पर ध्यान धारण कर मन्त्र जाप करे

सर्वप्रथम "श्री चक्र" को घर के पूजा के स्थान मे एक उच्च स्थान (चौकी) पर रखें चौकी पर पीला वस्त्र डाल कर, गुलाबी फूलों की पंखुडियाँ रखकर श्री चक्र की आसन देवे फिर जल से अभिशेक करे तथा अन्य भोडशोपचार जैसे तिलक, धूप-दीप इत्यादि करके फिर भगवती शारिका (चक्रेश्वरी) का मन्त्र अथवा किसी भि शक्ति मन्त्र का 108 अथवा 1008 बार जाप करे

फिर क्षमा माँग कर नमस्कार करें

इसके बाद किश्मिश इत्यादि नैवेध देकर इस श्री मन्त्र को घर अथवा दफ्तर में रखें

शुभ दीपावली

Satisar Family

MARRIAGE RITUALS

The Kashmiri Pandit convention does not approve the idea that marriage is a mere mutual agreement of two persons or a deal.

A marriage involved not only the two partners, but their respective families and even the vast society of friends and well wishers.

The righteous and divine force strengthens the mutual bond of love & relationship between the couple. If such a stand point is either weakened or denied, the system of marriage would lose its sanctity and significance and becomes pale.

If the institution of marriage is weakened, then it weakens the institution of family. If the base of the family is destabilized, then the whole edifice of the society loses its strength and safety.

With the Marriage season around we are giving the rationale behind certain rituals.

1. ENGAGEMENT (निश्चितार्थ)

Marriage is the choice of bride and bridegroom, colour, caste, ancestry (gotra), family lineage existing relationships, age factors, occupation, health, educational background, economic conditions, home and living situations and serveral other aspects are considered.

The ritual is performed to confirm the decision of marriage.

During the ritual the elders from both the families exchange flowers as witness to their resolve. जो कार्य केवल एक फूल के देने-लेने से पूरा हो उस गण्डुन **(Engagement)** पर व्यर्थ का आडाम्बर करना क्या ठीक है ? क्या हम यह पैसा अपने समाज के बीमार व बुजुर्गो की सेवा में नही लगा सकते है ? और होने वाले वर-वधु के लिए आर्शिवाद प्राप्त कर सकते है ।

2. HOLDING HANDS (अधवास)

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्य जरदृष्टिः यथा तः।

भगो अर्यमा सविता पुरन्धिः मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवा।

Bride grom holds the right hand of the bride (**This is also called Panigrahana**)

Aspiring to propitiate prosperity (like Progeny etc) and with an intent that you should continue to live even up till old age with me, your husband, I hold your hands. The deities like Bhaga. Aryama, Savitri and Purandhi have graced you to me for perpetuating good house hold".

बधयं बध्यवत्

Let us unite for ever like the divine couple Shiv-Shakti

अधवास के समय पूरे जीवन एक दूसरे के प्रति समर्पित रहने का प्रण **(Promise)** करना होता है।

ऐसे समय में वर-वधु का एक दूसरे के अँगूठी से खेलना व मजाक करना क्या इस रीति के भाव **(Purpose)** को ही खत्म नहीं करता है ?

3. SAPTPADI (सप्त फेरे)

i. ऊँ इश एकपदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान् विन्दावहै बहून् ते सन्तु जरदष्टयः

ii. ऊँ ऊर्जे द्विपदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान विन्दावहै बहून ते सन्तु जरदष्टयः

iii. ऊँ रायस्पोशाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान विन्दावहै बहून् ते सन्त जरदष्टयः

iv. ऊँ मायाभव्याय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान विन्दावहै बहून् ते सन्तु जरदष्टयः

v. ऊँ प्रजाभ्य पञ्चपदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान विन्दावहै बहून् ते सन्त जरदष्टयः

vi. ऊँ ऋतुभ्यः भाट्पदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान विन्दावहै बहून् ते सन्त जरदष्टयः

vii. ऊँ सखा सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान विन्दावहै बहून् ते सन्त जरदष्टयः

1st step for **Good Food in Life**.
2nd step for **Strength**.
3rd step for **Wealth & Prosperity**.
4th step for **Love and Affection**.
5th step for **Beauty of Progecy**.
6th step for **Opportunity Time**.
7th step for **Everlasting Friendship**.

The process is known as **SAPTAPADI.**

The Seven steps together can make even two stranges friends.

क्या आप जानते है कि आप ;वर-वधुद्ध एक दूसरे को कौन-कौन से सात वचन देते हैं? हमारे समाज में कई घर शादियों के बाद टूट जाते है । क्या इन वचनों का कोई मौल नही रहता है ?

अग्नि की सात जिव्हायै ;ज्वलदहमद्ध है। उन के सामने लिए वचनों को तोड़ देना क्या उचित है ?

परस्पर तपस्सम्पत फलायितपरस्परौ
प्रपन्च मातापिरों प्राच्चों जायापती स्तुमः

4. DWARA PUJA (द्वार पूजा)

शुक्लबरधर विष्णु----------
नमामि गौर हदार भुजारकम इते द्वार पूजाम् शाखायाम

Every body would like to see Shiv & Parvati entering their homes, for this purpose the side walls of main entrance are decorated by drawing the branches of tree facing upwards indicating the upwards movement to good luck. The Bride groom & Bride are raised to the level of Divinity during the process of Devgoen. Utmost efforts shall be done to let them enter the house after worshiping the deities at door like Lord Ganapati etc.

लाखों रूपये खर्च करने के बाद क्या हम द्वार पूजा अपने-अपने निवास स्थान पर नही कर सकते है ?

क्या हम द्वार पर खड़े शिव-पार्वती का स्वागत मंगलिक स्तोत्रो से नही कर सकते ? क्या हमारी धरोहर होटलों व झंझधरों के द्वारो पर ही दम तोड़ेगी?

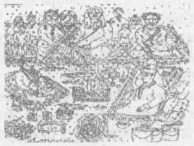

5. DYBATHE (दयबत)

अन्नमेव व्यवनमम्
मम च अमश ----------

During the Dybathe Bride & groom are offered the food. For this food many Sages & Rakshas wait to get the prasad from the Divine couple and eating this first food together establish the enengies in the five vital winds. (Seaths)

Because of this the future progenies is expected to be healthy & pious.

(दयबत की जगह होटल व झंझधर का खाना अशुद्ध तरीके से बना होता है ठीक है आज हम डवकमतद हो गये है परन्तु दयबत भगवान व भगवती को प्रसाद दिया जाता है। इसलिए इसको हमेशा अलग ही पकाने की कृपा करें नही चलता है तो केवल भात के साथ दही का सेवन कर सकते है। क्या आने वाली पीढ़ीयो के लिए प्राण प्रतिष्ठा करना हमारा दायित्व नही है?)

As a fruit of penace done by each one, to obtain the other, they have now become husband and wife. Prostrations to those divine eternal couple, who are the celestial parents of this great cosmic existence.

Just remember we do not have any sub-caste & groups among Kashmiri Pandits. We are all equals and so are our children. We all are Pandits (Brahmans) first (the protectors of Pre Vedic & Vedic ethos.

आज जब हम पूरे विश्व में फैले है और सम भाव से हर वर्ग को देखते है । क्या विवाह के समय में अपने समाज में वर्ग ढूँडना उचित है ?

– Social Div. Satisar

॥ श्री यन्त्रम ॥

चन्द्र तारुक.......

"SWAMI ANAND JI MAHARAJ"

In Kashmir, the land of saints, lived a great saint Sh. Anand Ji Maharaj also known popularly as Anand Bab. Although Swami Ji did not believe in popularity yet he rose to popularity because of his miraculous powers and was widely loved and respected by people of all faiths and hues. Swami Ji wore a lean physique but his radiant divine face coupled with his smiley look always looked calm and he spoke very softly.

Swami Ji was born in Vilgam village of Handwara and came to Srinagar in his late teens for employment where he got introduced to Pt Dina Nath Dulloo of Karan Nagar, who was a forest officer and hosted Swami Ji. At Dulloos, Swami Ji dedicated himself to spirituality and it was during his stay with them that he had the first encounter with truth and divinity. He visited Vichar Nag in wooden sleepers (Khraw) covering a distance of 10 kms at mid night and returned before dawn. His spiritual power caught the public eye when Pt Dina Nath Dulloo observed an immense light emanating from the body of the Swami ji. Here onwards, his divinity spread in whole Kashmir. Later on Swami Ji shifted to Khir Bhawani and offered prayers and Hawan there. In later part of his life he stayed with Kilam family at Shivpora and left his mortal remains in 1983

Swami ji had done several miracles. He showered his love on all who sought salvation at his lotus feet. Apart from mitigating sufferings of his devotees Swami Ji stressed on salvation from worldly objects and advised his devotees to seek God from within. He was votary of simple living and love for humanity. He professed truthfulness and many of devotees were bestowed and blessed by Swami Ji .He advised his followers to surrender to God and unceasingly seek him for breaking the shackles of materialism and attain the salvation for satiating the spiritual thirst. This he said made humans fearless and constructive in approach and thus attain the ability to make our dreams come true. Many of Swami Ji's followers have taken the task of spreading his message of love and spirituality by holding havans spiritual discourses on the philosophy of Swami Ji. We pay our respectful homage to this great saint today.

May Swami Ji continue to bless this community from heavens in the days to come and show us the way to truth and enlightenment and salvage us from the present catastrophe.

Ramesh Kumar Misri
Canal Road, Jammu

जय शिव शंकर जी

1. ऊँ छुय ओंकार परितव लोलो
मि सअति भवसर तरि लोलो
2. ऊँ छुय भाक्ति ऊँ छय भक्ति
ऊँ नाव सरिथ्य तरि लोलो
3. ऊँ छुय तन तय ऊँ छुय मन, तय,
ऊँ स्अति ओंकार बनि लो लो
4. ऊँ छुय माला ऊँ छुय ज्वाला
ऊँ स्अति दर्शन मअलि लोलो
5. दपान दास सुशमा छय बार बार
ऊँमस प्यठ्य छुय ओंकार,
तमि स्अति मुकति म्यलि लो-लो

सुशमा भट्ट

गाशिर अछॅर

कंदस त॑ मूजि कुनुय स्वाद!

The sugar candy and the raddish taste alike sometimes god and bad persons are not dislignished.

World Indrakshi Recitation

On 11th July,2008, in response to a call from the Satisar Foundation on the eve of *Pratipadha* , messages from across the world revealed that the Indrakshi recitation programme was celebrated with great fervor. On this day when the Gods are at their pleasant best, our community members celebrated the day with devotion. Messages of celebration have been received from Srinagar, Jammu, NCR and other parts of the country about these celebrations. Messages of celebrations also poured in from US and UK where the community members had gathered to celebrate this auspicious day collectively. While most of the congregations in Jammu were held in various temples across Jammu, in other cases members individually also recited the Indrakshi dasham at their residences. Temple committees in Jammu played a very special role by arranging collective prayers which not only promoted harmony but also added the fervor to this programme. While Satisar Foundation thanks all the devotee people in making this programme a thundering success, it is hoped similar response shall be received in future also to our programmes in future also.

This day of devotion is perceived to be an auspicious occasion when a collective prayer is held to please rev Godess Durga . Let us hope the Bhagwati bestows us with her blessings on all of us and helps us in this hour of catastrophe.- Tatha Astoo

SATISAR FOUNDATION

APPEAL

IN ORDER TO ENABLE US TO FULFIL OUR COMMITMENT TO SEE PROJECTS THROUGH, WE APPEAL OUR GENEROUS COMMUNITY MEMBERS INDIVIDUALLY AND COLLECTIVELY TO COME FORWARD TO FINANCE A PART OR WHOLE OF ANY OF THE PROJECTS. WE ALSO LOOK FORWARD TO. SMALL CONTRIBUTIONS FROM OUR PATRONS TO KEEP THE FLAME OF " SATISAR" ALWAYS KINDED. ANY RELIGIOUS LITERATURE WHICH YOU THINK SHOULD REACH THE COMMUNITY MEMBERS MAY BE SENT TO RESEARCH DIVISION OF FOUNDATION FOR PUBLICATION.

FOR DETAILS CONTACT OUR EDITORIAL BOARD CELL NUMBERS FOR ANY CONTRIBUTION/ASSISTANCE.

Social Code

1. PRESERVE AND PROMOTE OUR LANGUAGE;

- By conversing in Kashmiri with our children and encouraging them to learn, speak and interact in Kashmiri.
- By interacting and speaking with out fellow community brethren in Kashmiri.

2. PROTECT OUR IDENTITY;

- By imbibing a sense of pride in our unique social, cultural and spiritual tradition.
- By maintaining our age-old social marital order and promoting and encouraging marriages within the fold.

3. UPHOLD OUR TRADITIONS;

- By following the indigenous scientific Lunar calender in observing rituals, festivals, special occasions etc.
- By celebrating birthday's, rituals, religious occasions and unique Kashmiri Pandit festivals.

4. STRENGTHEN OUR BROTHERHOOD;

- By expanding our social circle and
- By caring for each other; Mutual care is the only ray of hope for our Survival in Exile.

5. STRENGTHEN SOCIO-CULTURAL INSTITUTIONS;

- Physically, intellectually and financially, as these are the pillars of our Identity.

द्वज्ञ सुपर्णा सयुजा सखाया, स्मानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वरद्वत्य, नश्नन्नयो अभिचाकशीति।।

Two birds; living together and friendly to each other reside on one and the same tree; out of the two one eats the fruits (The result of past deeds) with great relish, the other one, not eating; merely looks on (Manduka - Illrd).

Kindly make us understand this riddle - Satisar

Hony. Editor..... Virender Wangnoo (9419192733)
Sub-Editor ..... Satish Munshi (9419195317)
DTP & Setting..... Ajay Wuthoo (9419124626)
Published by ..... Sh. S.L. Tickoo (Chairman) 0191-2555077
Printed at
High-Tech Printers
Main Chowk, Janipur, Jammu 9419131650, 9906256577

SATISAR FOUNDATION
Post Box No. 118, Head Post Office (Jammu) J&K
Call : 9419113414, 9419623511, 0191-2593948
e-mail :Satisar 2000@yahoo.com
Visit us at www.Satisar.org